सत्यमेव जयते

पंच गौरव - ज़िला झालावाड़

जिला प्रशासन, झालावाड़

सत्यमेव जयते

मुख्यमंत्री
राजस्थान

संदेश

राजस्थान को अपनी भौगोलिक विविधताओं, प्राकृतिक संपदा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहां हर जिले की अपनी एक विशिष्ट पहचान है, जो वहां की उपज, हस्तशिल्प, औद्योगिक उत्पाद, खनिज संपदा और पर्यटन स्थलों में परिलक्षित होती है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने पंच–गौरव कार्यक्रम की शुरूआत की है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले की क्षमता एवं विशिष्टता को पहचानते हुए उनके संरक्षण, संवर्धन तथा विकास के माध्यम से जिलों को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान प्रदान करना है।

इस कार्यक्रम के तहत हर जिले में **पंच गौरव के रूप में एक उत्पाद, एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक खेल और एक पर्यटन स्थल चिह्नित** किया गया है। यह पहल जिलों की विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण में सहायक होगी और इससे आर्थिक उन्नति तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

मुझे विश्वास है कि पंच गौरव कार्यक्रम से आमजन के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर, कौशल उन्नयन, उत्पादकता में वृद्धि एवं विभिन्न क्षेत्रों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने में मदद मिलेगी। साथ ही हमारे संयुक्त प्रयासों से विकसित राजस्थान का सपना भी साकार होगा।

जिले में पंच–गौरव कार्यक्रम अपने उद्देश्यों को हासिल करने में सफल हो, इसके लिए में अपनी हार्दिक शुभकामनाए प्रेषित करता हूं।

(भजन लाल शर्मा)

सत्यमेव जयते

राजस्थान सरकार

संदेश

झालावाड़ जिले की सांस्कृतिक, प्राकृतिक और ऐतिहासिक समृद्धि को पंच गौरव कार्यक्रम के माध्यम से पहचान देना राज्य सरकार की दूरदर्शी सोच का प्रमाण है। जिले द्वारा एक जिला एक उत्पाद में कोटा स्टोन, एक खेल में बास्केटबॉल, एक प्रजाति में सागवान, एक फल में संतरा तथा एक गंतव्य में गागरोन किला का चयन, जनसामान्य को गौरव और पहचान की भावना से जोड़ता है।

इन गौरवों की जानकारी से सुसज्जित 'पंच गौरव जिला झालावाड़' पुस्तिका, न केवल जिले की उपलब्धियों को जन–जन तक पहुँचाएगी, बल्कि पर्यटन, रोजगार एवं आर्थिक गतिविधियों को भी प्रोत्साहन देगी।

इस प्रयास के लिए जिला प्रशासन तथा समस्त टीम को हार्दिक शुभकामनाएं।

(ओटाराम देवासी)

ग्रामीण विकास, पंचायतीराज,
आपदा प्रबंधन, सहायता एवं
नागरिक सुरक्षा विभाग राज्य मंत्री
एवं प्रभारी मंत्री झालावाड़

सत्यमेव जयते

राजस्थान सरकार

संदेश

राज्य सरकार द्वारा प्रदेश के समग्र विकास एवं स्थानीय विशिष्टताओं के संरक्षण की दिशा में पंच गौरव कार्यक्रम एक अभिनव एवं दूरदर्शी पहल है। झालावाड़ जिले द्वारा इस कार्यक्रम के अंतर्गत कोटा स्टोन, बास्केटबॉल, सागवान, संतरा एवं गागरोन किले का चयन, जिले की सांस्कृतिक, आर्थिक एवं प्राकृतिक विविधताओं का सुंदर प्रतिबिंब प्रस्तुत करता है।

पंच गौरव के माध्यम से जिले के समावेशी विकास हेतु जो योजनाबद्ध प्रयास किए जा रहे हैं, वे निश्चित ही जनकल्याण को नई दिशा देंगे। इन गौरवों की विस्तृत जानकारी, योजनाओं एवं चित्रों सहित प्रकाशित 'पंच गौरव जिला झालावाड़' पुस्तिका, जानकारी और प्रेरणा का सशक्त माध्यम बनेगी।

प्रकाशन हेतु मेरी ओर से शुभकामनाएं और जिले के उज्ज्वल भविष्य के लिए मंगलकामनाएं।

(डॉ. रवि जैन)
आई.ए.एस.
सचिव, पर्यटन विभाग, कला, साहित्य,
संस्कृति और पुरातत्व विभाग और
महानिदेशक, जवाहर कला केंद्र,
राजस्थान, जयपुर एवं
प्रभारी सचिव, झालावाड़

सत्यमेव जयते

राजस्थान सरकार

संदेश

पंच गौरव कार्यक्रम, जिलों की विशिष्ट पहचान को उभारने और स्थानीय संसाधनों को विकास से जोड़ने की एक अत्यंत प्रभावशाली पहल है। झालावाड़ जिले द्वारा कोटा स्टोन, बास्केटबॉल, सागवान, संतरा एवं गागरोन किले के रूप में जिन पंच गौरवों का चयन किया गया है, वे जिले की बहुआयामी क्षमताओं को रेखांकित करते हैं।

इन गौरवों पर आधारित 'पंच गौरव जिला झालावाड़' पुस्तिका, जिले के इतिहास, आर्थिक संभावनाओं एवं विकास योजनाओं की जानकारी को समाहित करते हुए, आमजन एवं पर्यटकों के लिए एक उपयोगी दस्तावेज सिद्ध होगी। यह पहल जिले को नई पहचान दिलाने में भी सहायक होगी।

इस सार्थक प्रयास के लिए शुभकामनाओं के साथ जिले के उत्तरोत्तर विकास की कामना करता हूँ।

(राजेन्द्र सिंह शेखावत)
आई.ए.एस.
संभागीय आयुक्त, कोटा

सत्यमेव जयते

राजस्थान सरकार

संदेश

राज्य सरकार द्वारा प्रदेश के सर्वांगीण विकास एवं जनकल्याण हेतु सतत् रूप से क्रियान्वित की जा रही योजनाओं एवं नवाचारों के अंतर्गत, राज्य सरकार के सफलतम एक वर्ष के कार्यकाल की उपलब्धियों के सुअवसर पर प्रदेश के समस्त जिलों में 'पंच गौरव कार्यक्रम' का शुभारम्भ किया गया है। कार्यक्रम के अंतर्गत प्रत्येक जिले की विशिष्टताओं एवं सांस्कृतिक, आर्थिक, प्राकृतिक एवं ऐतिहासिक धरोहरों को चिन्हित करते हुए पंच गौरव का चयन किया गया है, जिससे स्थानीय स्तर पर विकास की नवीन संभावनाओं को सशक्त रूप प्रदान किया जा सके।

झालावाड़ जिले में पंच गौरव कार्यक्रम के अंतर्गत एक जिला एक उत्पाद में कोटा स्टोन, एक जिला एक खेल में बास्केटबॉल, एक जिला एक प्रजाति में सागवान, एक जिला एक फल में संतरा, तथा एक जिला एक गंतव्य में गागरोन किला का चयन किया गया है। जिला प्रशासन झालावाड़ द्वारा इन पंच गौरवों के क्षेत्र में नवाचारों एवं विकासोन्मुखी योजनाओं के समन्वय से दीर्घकालिक कार्य योजना तैयार कर, संबंधित विभागों के सहयोग से सतत् एवं लक्षित प्रयास किए जा रहे हैं, जिससे जिले को सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक प्रगति के पथ पर अग्रसर किया जा रहा है।

इन पंच गौरवों के ऐतिहासिक महत्व, आर्थिक लाभ, क्षेत्रीय विकास में भूमिका, भावी कार्ययोजना एवं छायाचित्रों का समावेश करते हुए 'पंच गौरव जिला झालावाड़' नामक एक परिसंहित पुस्तिका का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पुस्तिका जिले की गौरवशाली विरासत से परिचय कराने के साथ–साथ एक समृद्ध सूचना स्रोत के रूप में भी उपयोगी सिद्ध होगी।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'पंच गौरव जिला झालावाड़' पुस्तिका, जिले की विशिष्ट पहचान को सुदृढ़ करने एवं विकासोन्मुख प्रयासों को गति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

(अजय सिंह राठौड़)
आई.ए.एस.
जिला कलक्टर, झालावाड़

विवरणिका

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1	झालावाड़ एक नजर में	7
2	एक जिला एक गन्तव्य ''गागरोन किला''	8
3	एक जिला एक फल ''संतरा''	11
4	एक जिला एक खेल ''बास्केटबॉल''	14
5	एक जिला एक प्रजाति ''सागवान''	17
6	एक जिला एक उत्पाद ''कोटा स्टोन''	20

झालावाड़ एक नजर में

क्षेत्रफल	6,219 वर्ग कि.मी.
उत्तरी अक्षांश	23^0 45′ 20′′ से 24^0 52′ 17′′
पूर्वी देशांतर	$75^0$27′ 35′′ से 76^0 56′ 48′′
जनसंख्या (2011)	
पुरूष	7,25,143
महिला	6,85,986
कुल	14,11,129
जनसंख्या घनत्व	227 प्रति वर्ग कि.मी.
साक्षरता	61.50 प्रतिशत
पुरूष साक्षरता	75.75 प्रतिशत
महिला साक्षरता	46.53 प्रतिशत
महिलाएं प्रति हजार पुरूष	946
उपखण्ड	8
तहसील	12
नगर परिषद्	1
नगर पालिका	4
पंचायत समिति	8
ग्राम पंचायत	254

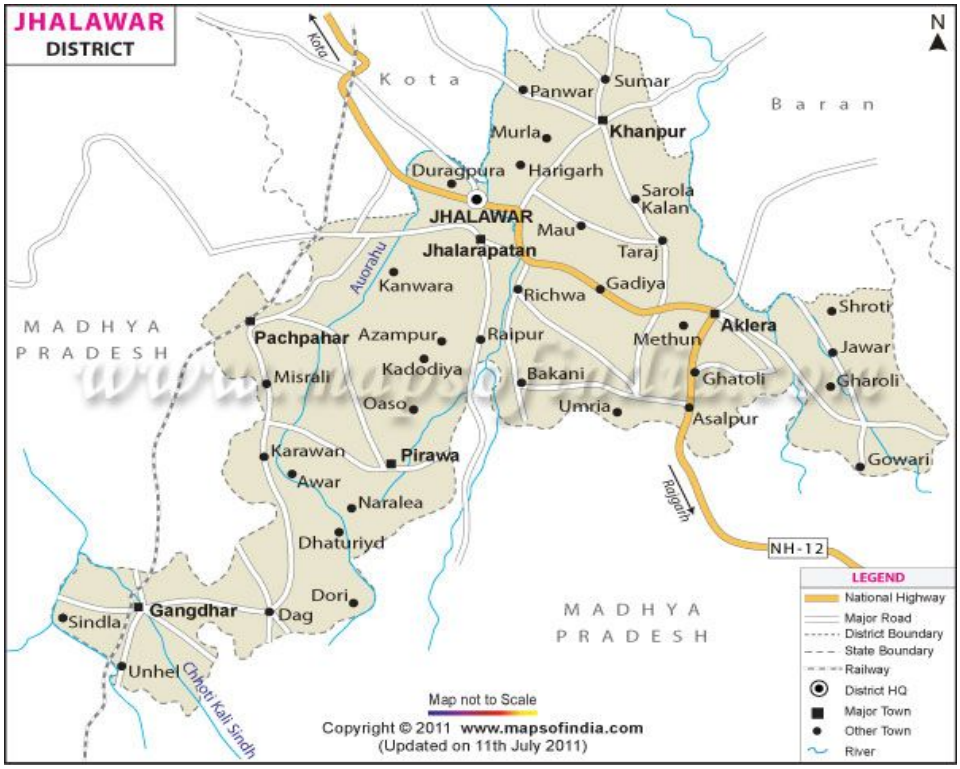

एक जिला एक गन्तव्य
''गागरोन किला''

विश्व विरासत की सूची में शामिल गागरोन किला वर्तमान में राज्य पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग के अधीन संरक्षित स्मारक है। किले में समय–समय पर राज्य सरकार द्वारा संरक्षण एवं जीर्णोद्धार के कार्य करवाये गये है।

गागरोन दुर्ग का निर्माण 08 से 18 वीं शताब्दी तक विभिन्न चरणों में हुआ। यह दुर्ग खड़ी चट्टानो पर बिना नींव के बना हुआ है एव तीनो ओर से आहू एवं कालीसिंध नदियों के जल से घिरा हुआ है। जल व पहाड़ी दुर्ग की मिश्रण तकनीक से बना यह दुर्ग 12 वीं शताब्दी में बीजल डोड के पश्चात खींची राजपूतों के आधिपत्य में आ गया। 16वीं में इसे मांडू के सुल्तान होशंगशाह ने जीत लिया। उससे शेर शाह सूरी ने, फिर मुगलों ने व अंततः मुगलों से कोटा के शासक महाराव भीमसिंह को मिला। यहां 14 युद्ध व दो जौहर का वृतांत मिलता है।

यहां प्रताप राय खींची राजा रहे जो सत रामानंद जी के शिष्य व कबीर के गुरु भाई थे। इनके भजन गुरुग्रंथ साहिब में संग्रहित है। आप संत पीपा नन्द जी के नाम से विख्यात हुए। यह किला पीपानन्द जी की जन्म स्थली है। अकबर के नवरत्नों में से पृथ्वीराज जी ने यहां रहते बेली क्रिसन रुक्मणि री की रचना की।

दुर्ग में महल, बारादरी, जौहर कुंड, रामबुर्ज, मधुसूदन मंदिर, बारुदखाना एव विभिन्न दर्शनीय स्थल है। 23 जून 2013 को यूनेस्को ने इसे वर्ल्ड हेरिटेज की सूची में शामिल किया।

गागरोन किले में निवास करने वाले हीरामन तोते जिन्हें गागरोनी तोते के नाम से भी जाना जाता है, अपनी विशेषताओं के लिए विख्यात रहे हैं, लेकिन समय के साथ अब यह लुप्तप्रायः होते जा रहे हैं।

यह किला एक और जहां रामानंद संप्रदाय के प्रमुख सत शिरोमणि पीपाजी के लिए विख्यात है तो वहीं इसी किले के परकोटे में सूफी संत हजरत हमीदुद्दीन चिश्ती उर्फ मिट्ठे महावली सरकार की दरगाह भी स्थित है।

एक जिला एक फल
''संतरा''

झालावाड़ जिले में समग्र कपास काली मिट्टी, प्रचुर मात्रा में मीठे पानी की उपलब्धता एवं उपयुक्त जलवायु होने के कारण जिले में करीब 16 हजार कृषकों द्वारा 24000 हेक्टर में संतरा के बगीचे विशेष रूप से भवानीमण्डी, पचपहाड़, पिड़ावा, सुनेल एवं रायपुर तहसील में स्थापित है। जिले को संतरा उत्पादन के लिए छोटा नागपुर के रूप में पहचाना जाता है। पूरे भारत वर्ष में झालावाड़ जिला नागपुर (महाराष्ट्र) के बाद उत्पादन में लगभग 12 प्रतिशत योगदान देकर द्वितीय स्थान पर आता है।

परिचयः– संतरा (सिट्रस रेटीकुलाटा) रूटेसी कुल नींबू वर्गीय फल है। संतरा उत्पादन के लिए अधिकतम तापमान 38 डिग्री सेन्टीग्रेड एवं न्यनूतम तापमान 13 डिग्री सेन्टीग्रेड उपयुक्त है। फल में विटामिन–सी, बी समूह, विटामिन ए, कैल्शियम, पोटेशियम तथा फॉस्फोरस प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। फल का उपयोग ज्यूस. सलाद, सिरफ, जैम, कैण्डी आदि में किया जाता है।

संतरा की प्रमुख किस्में नागपुरी संतरा, नागपुरी सीडलेस, किन्नों, डेजी, क्लेमेंटाइन एवं मिखाईल किस्म प्रमुख है जिले में 90 प्रतिशत बगीचों में नागपुरी संतरा किस्म के कृषकों ने बगीचे स्थापित कर रखे हैं।

संतरा बगीचों में वृद्धि का कारण– जिले में संतरे की उत्पादकता प्रति हेक्टर लगभग 13.70 मै. टन प्रति हेक्टर है। बाजार के औसत मूल्य 13.00 रू. प्रति किलो से 1.80 लाख रु. की सकल आय प्राप्त होती है, जो गेहूं, सरसों की सकल आय से ढाई गुना अधिक है।

अनुदान देय का संक्षिप्त विवरणराष्ट्रीय बागवानी मिशन अन्तर्गत गत्त वर्षों में संतरा बगीचा स्थापना पर कृषक को इकाई लागत का 50 प्रतिशत अथवा अधिकतम 20000 रू. अनुदान, वर्ष 2006–07 से उपलब्ध कराया जा रहा है। देय अधिकतम अनुदान राशि में से पौधों की 50 प्रतिशत अनुदान राशि के उपरान्त शेष अनुदान राशि 60:20:20 के अनुपात में 3 वर्ष के दौरान बगीचा स्थापना सत्यापन के आधार पर कृषक के खाते में डीबीटी की जाती है। वर्ष 2022–23

एवं 2023–24 में मुख्यमंत्री कृषि बजट घोषणा अन्तर्गत देय अनुदान राशि लागत का 75 प्रतिशत, अधिकतम 30,000 रु. कर दी गई है। वर्ष 2023–24 के दौरान जिले में 324 हेक्टर क्षेत्रफल हेतु 276 कृषकों की नवीन संतरा बगीचा स्थापना के लिए देय अनुदान राशि स्वीकृत की गई है।

इसके अतिरिक्त संतरा बगीचों में ड्रिप संयंत्र स्थापना पर ''पर ड्रोप मोर क्रोप'' अन्तर्गत सामान्य कृषकों को 70 प्रतिशत एवं लघु सीमान्त कृषकों को 75 प्रतिशत अनुदान देय है। एनएचएम के अन्तर्गत संतरा उत्पादन को प्रोत्साहन के मद्देनजर कृषक प्रशिक्षण, सेमीनार, पुराने बगीचों का जीर्णोद्वार एवं परियोजना आधारित ग्रेडिंग / वैक्सिंग प्लान्ट लगाये जाने पर अनुदान सहायता उपलब्ध है।

एक जिला एक खेल
''बास्केटबॉल''

झालावाड जिले मे बास्केटबॉल राज्य सरकार की 100 दिवसीय कार्ययोजना में खेलों के विकास हेतु शामिल एक जिला एक खेल योजना के तहत झालावाड़ जिले में राज्य खेल बास्केटबॉल का केंद्र स्वीकृत हुआ है। झालावाड़ जिले में बास्केटबॉललोकप्रिय खेलों में से एक है।झालावाड़ में यह खेल बहुत पहले से प्रचलित है। यहाँ से पूर्व में भी बहुत से खिलाड़ियों ने राज्य स्तर और राष्ट्रीय स्तर पर झालावाड़ का नाम रोशन किया है ।

खिलाड़ियों की सहभागिता

पिछले कुछ समय में ही यहाँ से 40 से अधिक खिलाड़ियों ने राज्य स्तर पर विभिन्न आयु वर्ग की प्रतियोगिताओं और स्कूल खेल एवं विश्वविद्यालय से संबंधित खेलों में भाग लेकर जिले को गौरवान्वित किया है। वर्तमान मे भारत सरकार की सेवा में कार्यरत अरशद खान पुत्र श्री हबीब खान, जिन्होंने झालावाड़ जिले के छोटे से कस्बे अकलेरा से माध्यमिक शिक्षा प्राप्त की, लेकिन उनकी बास्केटबॉल के प्रति दीवानगी और समर्पण ने उन्हें राष्ट्रीय और विश्वविद्यालय स्तर पर पहचान दिलाई। उन्होंनेझालावाड जिले का 8 बार राज्य बास्केटबॉल चैम्पियनशिप में प्रतिनिधित्व किया, एक बार केंद्रीय कोचिंग कैम्प में भाग लिया और विश्वविद्यालय टूर्नामेंट में कोटा विश्वविद्यालय बास्केटबॉल टीम का प्रतिनिधित्व किया। इसके पश्चात् 2013 में केंद्रीय सरकारी सेवा में चयनित हुए। 2019 एवं 2020 मे DRDO राष्ट्रीय प्रतियोगिता में दो बार स्वर्ण पदक जीते हैं और 2021 में केंद्रीय सरकार कर्मचारी प्रतियोगिता में रक्षा मंत्रालय की टीम का प्रतिनिधित्व करते हुए रजत पदक भी जीता है। यह एक बहुत ही गर्व की बात है। अरशद खान ने झालावाड़ जिला टीम से रक्षा मंत्रालय, भारत की टीम का सफर तय किया यह उनके खेल कौशल और समर्पण को दर्शाता है।

इसके अतिरिक्त झालावाड़ जिले सेअबीर ख़ान ने वेस्ट जोन अंतर विश्वविद्यालय प्रतियोगिता में कोटा यूनिवर्सिटी का प्रतिनिधित्व किया वहीं उनके भाई हुमायूँ ख़ान ने अखिल भारतीय विश्वविद्यालय प्रतियोगिता में भाग लिया है। वर्तमान में जिला मुख्यालय पर राजकीय खेल संकुल में एक सिंथेटिक बास्केटबॉल कोर्ट और एक सीमेंटेड कोर्ट है इसके अतिरिक्त केंद्रीय विद्यालय एवं अभियांत्रिकी महाविद्यालय और कई निजी विद्यालयों में इसके कोर्ट बने हुए हैं जहाँ पर नए खिलाड़ी इस खेल की बारीकियां योग्य प्रशिक्षकों एवं सीनियर खिलाड़ियों से सीख रहे हैं। राज्य सरकार की वर्ष 2025–26 की बजट घोषणा में राजकीय खेल संकुल में इन्डोर हॉल्स के निर्माण की घोषणा की गई है जिसमें बास्केटबॉल कोर्ट का भी निर्माण किया जाएगा।

एक जिला एक प्रजाति
''सागवान''

सागवान (टीक) (Tectona grandis)

राज्य सरकार के निर्देशानुसार प्रत्येक जिले में विशेष नस्ल की पौध वहां के पर्यावरण को देखते हुए तैयार किये जाने की कार्ययोजना के तहत झालावाड़ जिले में सागवान प्रजाति का संरक्षण एवं संवर्धन किया जाएगा।

सागवान की विशेषता

सागवान अपनी मजबूती, टिकाउपन और पानी व दीमक प्रतिरोधक गुणों के लिए प्रसिद्ध है। शुष्क टीक कम गहराई वाली मिट्टी अथवा मुरमी मिट्टी में 900 मिली मीटर से 1300 मिली मीटर तक वर्षा के क्षेत्र में साधारण से मोडरेट ढलान के स्थानों पर सफलता पूर्वक उगता है। सागवान में तीव्र स्थुण शक्ति (कोपेसिंग पावर) प्रकृति द्वारा प्रदत्त है अतः बार–बार अवैध कटान होने के उपरान्त भी पुनः कोपिसशुट्स निकल आते है एवं सागवान की प्रजाति अचानक नष्ट नहीं होती है।

सहायक प्रजातियां

सागवान के साथ पाई जाने वाली अन्य प्रजातियों धोंक, तेन्दू, हाक, सालर, मुरजन, महुया, खेजडी, बांस, अर्जुन जामुन, बहेड़ा, कलम, कड़ाया, बेलपत्र आदि है। अधोवन में खैर, कुमठा, गोयाखैर, अमलताश, दुधी, कड़वाला, सीताफल, झिंझा, हिंगोट, हारसिंगार, करोन्दा, बेकल, जाल आदि प्रजातियां है।

झालावाड़ जिलें में सागवान की उपलब्धता

झालावाड़ जिला मध्यप्रदेश की सीमा से लगा हुआ होने एवं भूमि तथा जलवायु की समानता तथा पर्याप्त वर्षा के कारण यहां सागवान प्रजाति के लिए उपयुक्त वातावरण उपलब्ध है। बहुउपयोगी लकड़ी होने के कारण सागवान के पौधों को बढ़ने से पहले ही पोल अवस्था में ही काटने के कारण बहुत कम सख्या में पेड़ों द्वारा बीज का प्राकृतिक रूप से विकिरण हो पाता है। इसलिए प्राकृतिक पुनरुत्पादन भी नगण्य है। इसके उपरान्त भी रेंज खानपुर में वनखण्ड मालनवासा तारज, वनखण्ड धानोदा में राड़ी सागवान की व रेंज मनोहरथाना में वनखण्ड घोड़ाखेड़ा एवं चमरगढ़ कोटड़ा तथा रेंज पिड़ावा में वनखण्ड गैलानी ए. रेंज असनावर में वनखण्ड रातादेवी, रेंज झालावाड़ में वनखण्ड रायपुर बालगढ़ एवं लोटियाझीर, रेंज अकलेरा में वनखण्ड घाटोली में आज भी सागवान के पोलार्डस तथा पौधे पर्याप्त मात्रा में पाये जाते हैं। पिड़ावा रेंज में वनखण्ड गैलानी ए तथा मनोहरथाना रेंज में वनखण्ड चमरगढ़ कोटड़ा में भ्रमण के समय यह पाया गया कि ग्रामीणों की जागरूकता से जंगल की सुरक्षा के

कारण सागवान के पौधे 4 से 5 मीटर ऊँचाई तक व गोलाई 0.31 तक पहुँच चुके हैं। सागवान की डांडिया एवं लकड़ी कृषि तथा फर्नीचर के लिए उपयुक्त होने के कारण सदैव नुकसान की आशंका बनी रहती है। इस कारण उचित सुरक्षा के बिना पेड़ो को अच्छे जंगल में परिवर्तित करना एक चुनौती पूर्ण कार्य है। इन कक्षों के आस–पास के खाली वन क्षेत्रों में तथा सागवान की पृष्ठ भूमि वाले रिक्त वनक्षेत्रो में सागवान के कृत्रिम पुनरूत्पादन के प्रयास किये जाने की आवश्यकता है, ताकि वनों की गुणवत्ता में सुधार के साथ ही बेकार पड़ी जमीन का समुचित उपयोग हो सके।

इसके अतिरिक्त जिले में अनेक किसानों तथा लोगों द्वारा भी निजी भूमि पर सागवान के पौधों का रोपण किया गया है। उपरोक्त क्षेत्रों में स्थित सागवान के प्राकृतिक एवं संरक्षित क्षेत्रों की सुरक्षा एवं संवर्धन हेतु Productivity Enhancement Operationsके तहत फेंसिंग, पुर्निंग, प्राकृतिक पौधे के थावलें, मृदा जल संरक्षण कार्य, सुरक्षाकर्मी पर 200.00 लाख व्यय कर सागवान के वनक्षेत्र में वृद्धि के प्रयास किये जायेंगें।

उपयोग

सागवान की लकड़ी अत्यन्त उपयोगी है। इसका उपयोग फर्नीचर, दरवाजे, खिडकियां, नाव निर्माण और लकड़ी के अन्य उत्पादों में व्यापक रूप से किया जाता है तथा किसानों के द्वारा खेतों की मेड़ एवं उपलब्ध भूमि पर इसे लगा कर निश्चित समय में लाभ कमाया जा सकता है।

सागवान की पौध तैयारी

सागवान के पौधों की बड़े स्तर पर तैयारी और खेती के लिए सावधानीपूर्वक योजना और सही तकनीकों की आवश्यकता होती है तथा झालावाड जिले की भूमि, जलवायु और वर्षा इस प्रजाति के सम्वर्धन हेतु उपयुक्त है। इस हेतु वन मण्डल झालावाड़ अधीन विभिन्न रेंजों में 17 नर्सरियों में 170000 पौधे वर्ष 2024–25 में तैयार कर 2025–26 में संधारण उपरान्त जुलाई 2025 में वितरित/रोपित किये जायेगें।

सागवान के वृक्षारोपण कार्य

प्राकृतिक रूप से उपलब्ध सागवान के वनक्षेत्र जहां पौधों व वृक्षों की संख्या न्यून है। उन क्षेत्रों (मनोहरथाना, पिड़ावा, झालावाड़, असनावर अकलेरा एवं खानपुर) को पुनः विकसित करने हेतु सागवान प्रजाति के वृक्षारोपण एवं बीजारोपण के कार्य (Assisted Natural Regenration) मॉडल के तहत 300 हैक्टेयर में किये जायेंगे।

अन्य

जिले में सागवान प्रजाति के रोपण एवं उपयोगिता के संबध में व्यापक प्रचार–प्रसार किया जायेगा तथा Data Collection and Management Plan(Documentation) तैयार किया जाएगा तथा पूर्व से सागवान प्रजाति का संरक्षण एवं संवर्धन तथा इस क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य करने वाले व्यक्तियों एवं किसानों को चिन्हित कर प्रोत्साहित एवं सम्मानित किया जायेगा।

एक जिला एक उत्पाद
''कोटा स्टोन''

कोटा स्टोन राजस्थान के झालावाड जिले की प्रमुख प्राकृतिक निर्माण सामग्री है, जिसे भारतीय ब्लूस्टोन के नाम से भी जाना जाता है। यह स्टोन अपनी शानदार गुणवत्ता, सुंदरता और टिकाऊपन के लिए पूरे देश में मशहूर है।

झालावाड़ जिले में कोटा स्टोन के खनन का कार्य जिले में मुख्यतः भवानीमण्डी, झालरापाटन एवं सलोदिया क्षेत्र में किया जाता है। जिले में कुल खनन क्षेत्र 1259. 376 हैक्टेयर है, जिसमें से कोटा स्टोन का खनन क्षेत्र 202.5 हैक्टेयर है एवं लगभग 15 लाख 83 हजार 424 मैट्रिक टन कोटा स्टोन उत्पादित किया जा रहा है। वर्तमान में जिले में उत्पाद से संबंधित लगभग 550 इकाईयां कार्यरत है, जिनके माध्यम से जिले में लगभग 8500 व्यक्तियों को प्रत्यक्ष रूप से रोजगार उपलब्ध हो रहा है। इन इकाईयों की उत्पादन क्षमता लगभग 100 करोड़ वर्ग फीट प्रति वर्ष है। उत्पाद मुख्यतःफ्लोरिंग टाईल्स है। जिनका उपयोग फर्श, दीवार, सीड़ियों, किचन काउण्टर, गार्डन पाथ–वे इत्यादि में भी किया जाता है। इनका विपणन राजस्थान राज्य के साथ–साथ भारत के विभिन्न राज्यों में किया जाता है।

कोटा स्टोन की विशेषताएं एवं उपयोग

- कोटा स्टोन अपनी उच्च दृढता एवं मजबूती के लिए जाना जाता है। यह पत्थर अत्यधिक दबाव और धर्षण को सहन करने में सक्षम होता है, जिसके कारण इसे भारी ट्रैफिक वाले क्षेत्रों फुटपाथ और औद्योगिक क्षेत्रों में प्रयोग किया जाता है।
- कोटा स्टोन की फिनिशिंग में बहुत ज्यादा लचीलापन है। इसे जरूरत के हिसाब से फिनिश किया जा सकता है। इसे मशीन के साथ–साथ हाथ से काटा जा सकता है।
- कोटा स्टोन का प्राकृतिक रंग और उसकी चमकदार सतह इसे सुंदर और आकर्शक बनाती है। यह पत्थर विभिन्न रंगों में उपलब्ध होता है, जो इंटिरियर और एक्सटीरियर

दोनों में उपयोगी होता है। इसकी प्राकृतिक चमक और फिनिशिंग इसे आवासीय और व्यावसायिक भवनों में उपयोग के लिए आदर्श बनाती है।

- कोटा स्टोन का रखरखाव बहुत ही सरल होता है। इसे साफ करना आसान होता है और यह धूल और गंदगी को नहीं सोखता। इसके अलावा, यह पत्थर फफूंद और कीटाणुओं से मुक्त रहता है, जो इसे और स्वास्थ्य वर्धक बना देता है।
- कोटा स्टोन जलरोधक होता है। यह पानी को नहीं सोखता, जिससे यह बाथरूम, किचन और स्विमिंग पूल के आसपास के क्षेत्रों में उपयोग के लिए उपयुक्त होता है।
- कोटा स्टोन पत्थर एक गैर–छिद्रपूर्ण और नमी प्रतिरोधी पत्थर है, जो इसे एक बहुत ही स्वच्छ फर्श माध्यम बनाता है।
- यह एक प्राकृतिक पत्थर है जो कि अन्य पत्थरों के मुकाबले मानव स्वास्थ्य के अनुकुल है। क्योंकि यह एक अच्छा ताप परावर्तक होने के कारण, यह पैरों के नीचे हमेशा ठंडा और सबसे आरामदायक रहता है। प्राकृतिक पत्थर होने के कारण यह पर्यावरण अनुकूल होता है और इसके उत्पादन में कम उर्जा की खपत होती है।
- कोटा स्टोन अन्य निर्माण सामग्रियों की तुलना में लागत प्रभावी होता है। इसकी लंबी उम्र और रखरखाव की कम आवश्यकता इसे आर्थिक दृष्टि से भी लाभकारी बनाती है।
- कोटा स्टोन उद्योग स्थानीय अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह न केवल रोजगार प्रदान करता है, बल्कि स्थानीय कारीगरों की पारंपरिक कला और शिल्प को भी संजोए रखता है। उनकी मेहनत और कौशल हर स्लैब में झलकती है।

राजस्थान एक जिला एक उत्पाद पॉलिसी के तहत कोटा स्टोन नवीन उद्यमों के लिए प्रावधान

- सूक्ष्म उद्यमों को 25 प्रतिशत मार्जिन मनी अनुदान (अधिकतक सीमा 15 लाख)
- लघु उद्यमों को 15 प्रतिशत मार्जिन मनी अनुदान (अधिकतक सीमा 20 लाख)
- SC/ST/Women/PwBD/Young (Below 35 Years)उद्यमियों को अधिकतम 5 लाख रूपये का अतिरिक्त लाभ।
- उघमों में अत्याधुनिक तकनीकी/सॉफ्टवेयर हेतु वित्तीय प्रोसाहन।
- क्वालिटी सर्टिफिकेशन तथा स्टैण्डर्ड प्राप्त करने हेतु प्रोत्साहन।
- तकनीकी उन्नयन हेतु प्रोत्साहन।
- ई–कॉमर्स प्लेटफार्म पर उद्यम संचालन हेतु प्रोत्साहन।
- Marketing assistance for International and National Exhibition

एक जिला एक गन्तव्य ''गागरोन किला''

एक जिला एक फल ''संतरा''

एक जिला एक खेल ''बास्केटबॉल''

एक जिला एक प्रजाति ''सागवान''

एक जिला एक उत्पाद ''कोटा स्टोन''

धन्यवाद